Gs – इब्राहीम के जन्म से पहले, मैं हूँ युहन्ना ८:२१-५९ | 1

– Save This Page as a PDF–

इब्राहीम के जन्म से पहले, मैं हूँ

युहन्ना ८:२१-५९

खुदाई: यीशु ने कहा कि वह दुनिया की रोशनी है और पिछली फ़ाइल में पिता के साथ एक विशेष संबंध का दावा किया था। अब वे येशुआ को कैसे गलत समझ रहे हैं? टोरा- शिक्षकों और फरीसियों की पूरी गलतफहमी के आलोक में युहन्ना ८:३० का क्या महत्व है? इस दृश्य में धार्मिक नेता अंधकार का उदाहरण कैसे देते हैं? कौन सी गलत धारणाएँ इब्राहीम के वंशजों के लिए आध्यात्मिक स्वतंत्रता के मुद्दे को भ्रमित करती हैं? यीशु उन्हें किन मुद्दों का सामना करने के लिए बाध्य करता है (यूहन्ना ८:३४-४१)? ईसा मसीह क्या कहते हैं कि यह इस बात की अंतिम परीक्षा है कि कौन ईश्वर का है (योचनान ८:४२-४७)? प्रभु उन्हें न समझने का क्या कारण बताते हैं (यूहन्ना ८:३७, ४३, ४५, ४७)? योचनान ८:२४ और ५१ में उनके दावे द्वारा उठाया गया महत्वपूर्ण प्रश्न क्या है? यह मुद्दा यूहन्ना ७:४ से ८:५८ में संपूर्ण तर्क के केंद्र में कैसे है? मसीह इब्राहीम के प्रति उनकी वफादारी का उपयोग उनके विरुद्ध कैसे करता है? मसीहा का अंतिम दावा इतना आक्रोश क्यों पैदा करता है?

चिंतन: आप अपनी आध्यात्मिक विरासत में किस चीज़ से प्रसन्न हैं? यह किस प्रकार से एक आध्यात्मिक बाधा रही है? आप कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि आपके जीवन में उसके वचन के लिए जगह है? क्या साफ़ करने की ज़रूरत है ताकि जगह रहे? इस अध्याय में यीशु द्वारा किए गए चार दावों (यूहन्ना ८:१२, ३२, ५१ और ५८) में से, इस समय आपके लिए सबसे अधिक क्या अर्थ है? क्यों? इस अनुच्छेद से, आप उस व्यक्ति के लिए क्या कर सकते हैं जो ईमानदारी से यहोवा की तलाश कर रहा है? प्रभु के साथ आपके चलने में क्या मदद मिल सकती है?

फरीसियों द्वारा व्यभिचार में पकड़ी गई महिला को उनके पास लाने में रुकावट के बाद, यीशु ने शिक्षा देना जारी रखा। शिक्षण के अंत में योचनान ने बाद में हुई चर्चा का वर्णन किया, बिना यह बताए कि यह मंदिर में कहाँ हुई थी। फिर भी, यह स्पष्ट है कि शिक्षण आम तौर पर या तो महिलाओं के दरबार में होता था (देखें Nc– महिलाओं का दरबार), या सोलोमन के कोलोनेड में (देखें Nd– सुलैमान के ओसारे)। भबन का पर्बत पर लोगों की बड़ी भीड़ को संबोधित करने के लिए ये दो सबसे उपयुक्त स्थान थे।

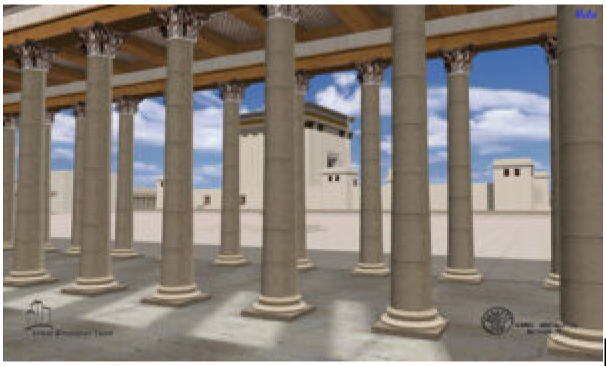

टोरा-शिक्षकों और फरीसियों ने यीशु के
अधिकार को चुनौती देना जारी रखा और उस सुबह बाद में उनके साथ खुले संघर्ष में लगे रहे। यह अभी भी बूथों के त्योहार का आठवां दिन था (लैव्यव्यवस्था २३:३६, ३९; गिनती २९:३५)। उस दिन को वास्तव में एक अलग दावत का दिन माना जाता था जिसे शेमिनी ‘अत्जेरेट’ कहा जाता था, जिसका अर्थ है आठवें (दिन) की उत्सव सभा। यह बिना किसी नियमित कार्य के आराम का दिन माना जाता था।

फरीसियों ने यीशु की चुनौती स्वीकार कर ली कि वह दुनिया की रोशनी है (देखें Gr – मैं जगत की ज्योति हूं) और उसके साथ खुले संघर्ष में लगे रहे। यहोवा ने उन से कहा, मैं जा रहा हूं, और तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और अपने पाप में मरोगे। जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते (यूहन्ना ८:२१)। एक बार फिर मसीह ने यूहन्ना ८:२३-२६ से फरीसियों के प्रति अपने अभियोग को दोहराते हुए कहा कि वे कभी स्वर्ग नहीं देखेंगे क्योंकि वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। और फिर से उन्होंने उसे सचमुच में ले लिया। इससे यहूदियों ने पूछा, “क्या वह स्वयं को मार डालेगा? क्या इसीलिए वह कहता है, ‘जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते’ (योचनन ८:२२)?” यह एक नयी शिक्षा थी. अब तक यीशु ने यह नहीं कहा था, “तुम्हें मुझ पर विश्वास करना चाहिए, मुझ पर विश्वास करना चाहिए, मुझ पर विश्वास करना चाहिए (ग्रीक: पिस्टिस) जब तक कि तुम अपने पाप में मरने के लिए तैयार न हो।” तो, मसीहा ने सरल, शाब्दिक भाषा में अपना अर्थ समझाया।

हमारे उद्धारकर्ता ने विरोधाभासों की एक जोड़ी के साथ अपने और अपने विरोधियों के बीच अंतर को प्रदर्शित किया। वे इस संसार से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। सबसे पहले, उन्होंने आगे कहा: आप नीचे से हैं; मैं ऊपर से हूं (योचनन ८:२३ए)। नीचे पतित सृष्टि का क्षेत्र है; जबकि, ऊपर स्वर्गीय क्षेत्र है जिसमें पाप मौजूद नहीं हो सकता। नीचे जन्मे लोग अपने पापों में मरने के लिए अभिशप्त हैं और फिर अपने दुष्ट कर्मों के लिए अनन्त न्याय भुगतेंगे (यूहन्ना ३:३)। ऊपर से जन्मे लोग पवित्र हैं और इसलिए, यीशु मसीह में शाश्वत रूप से सुरक्षित हैं (देखें Ms– विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)। यीशु ऊपर से है क्योंकि वह प्रभु है।

दूसरे, वह भिन्न क्रम का है। तुम इस संसार के हो; मैं इस दुनिया का नहीं हूं (यूहन्ना ८:२३बी)। वे उस दुनिया से संबंधित हैं जहां शैतान सर्वोच्च है (प्रथम

यूहन्ना ५:१९)। यह उनके इस आवश्यक स्वभाव के कारण है कि उन्होंने कहा: मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे; यदि तुम विश्वास नहीं करते कि मैं [वह] हूं, तो तुम सचमुच अपने पापों में मर जाओगे (यूहन्ना ८:२४)। कोनिया ग्रीक बस ईगो ईमी, आई एएम, एडोनाई का क्लासिक स्व-पदनाम है।

आशा करते हुए कि नाज़रीन उनके मसीहापन की कुछ स्पष्ट घोषणा करेंगे, उन्होंने पूछा: आप कौन हैं? परन्तु वह उनके जाल से बच गया और घोषणा की: बिल्कुल वही जो मैं तुम्हें शुरू से बताता आया हूँ। मुझे आपके बारे में निर्णय में बहुत कुछ कहना है। परन्तु जिसने मुझे भेजा है वह विश्वासयोग्य है, और जो कुछ मैं ने उस से सुना है वही जगत को बताता हूं। लेकिन यहूदी धार्मिक नेताओं को यह समझ में नहीं आया कि वह उन्हें अपने पिता के बारे में बता रहा था (योचनान ८:२५-२७)। मसीह के जीवन ने वह सब प्रमाणित किया जिसका उसने दावा किया था। वह उनसे बात भी कैसे कर सकता था? वे और वह अलग-अलग दुनिया के थे और उनके बीच संवाद असंभव था। जो कुछ उसने उनसे कहा था वे उसे समझना या प्राप्त करना नहीं चाहते थे। लेकिन जल्द ही वह समय आएगा जब सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा।

यीशु ने कहा, जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तब जान लोगे कि मैं वही हूं। मसीहा क्रूस पर अपनी मृत्यु के तरीके और साधनों की भविष्यवाणी कर रहा है, एक भविष्यवाणी जो उसने निकोडेमस को शायद दो साल पहले ही दी थी (यूहन्ना ३:१४-१५)। तब येशुआ ने बेथेस्डा के तालाब में अशक्त को ठीक करने के बाद फरीसियों के साथ हुई अपनी शिक्षा को दोहराया (योचनान ५:१-१७)। और मैं अपने आप कुछ नहीं करता, बल्कि वही बोलता हूं जो पिता ने मुझे सिखाया है (मेरी टिप्पणी देखें यशायाह Ir– क्योंकि संप्रभु प्रभु मेरी मदद करता है, मैं अपना चेहरा चकमक पत्थर की तरह बनाऊंगा)। जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदैव वही करता हूं जो उसे प्रसन्न करता है (योचनन ८:२८-२९)। मास्टर शिक्षक होने के नाते, हमारे उद्धारकर्ता ने एक बार भी सच नहीं कहा और आगे बढ़ गए। उन्होंने मंदिर में प्रत्येक दिन कई बार कई दर्शकों को एक ही पाठ पढ़ाया। योचनान द्वारा संरक्षित ये पाठ उस कई बार का प्रतिनिधित्व करते हैं जब मसीहा सत्य की घोषणा करने के बाद फरीसियों के क्रोध का लगातार निशाना बने। लेकिन युहन्ना पाठक को आश्वस्त करने के लिए एक सूक्ष्म संपादकीय नोट डालता है।

जबकि मसीह का विरोध उनके विद्रोह में स्थिर रहा, यहाँ तक कि उनके बोलने के बावजूद, कई लोगों ने उस पर विश्वास किया। और उन यहूदियों से, जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, यीशु ने फरीसियों और अन्य अविश्वासियों की सुनवाई में कहा: यदि तुम मेरी शिक्षा को मानते हो, तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो। मसीहा ने उन्हें आश्वासन दिया कि विश्वास किसी चीज़ का अंत नहीं है, जैसे कि वे आ गए हों; लेकिन एक शुरुआत, एक जन्म जिसके बाद विकास अवश्य होगा। विश्वासियों को पवित्र किया जाना है । भले ही लागत अधिक हो, उन्हें आज्ञाकारिता में बने रहना है। जैसे ही विश्वासी अपने जीवन को उसके सत्य के अनुसार व्यवस्थित करते हैं, वे सत्य को जान लेंगे

(यूहन्ना ८:३०-३१)। जानने के लिए ग्रीक शब्द गिनोस्को है, जो कम से कम चार में से एक है जिसे योचनान ने “जानना” के अर्थ में चुना होगा। हालाँकि, दूसरों के विपरीत, गिनोस्को केवल संवेदी अवलोकन के बजाय समझ पर जोर देता है। यह हिब्रू शब्द यदा से निकटता से संबंधित है, जो सबसे अंतरंग प्रकार के ज्ञान का वर्णन करता है। इसे उत्पत्ति की पुस्तक में देखा जा सकता है जब साँप बगीचे में बोला: क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जब तुम उसमें से खाओगे तो तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे (उत्पत्ति ३:५)।

तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा (योचनन ८:३२)। यह कुछ हद तक एक लोकप्रिय कहावत बन गई है, लेकिन फिर भी सच है। यह सत्य है जो येशुआ हा- माशियाच के व्यक्तित्व और कार्य में निहित है। यह सत्य को बचा रहा है। यह सत्य है जो पुरुषों और महिलाओं को पाप के अंधकार से बचाता है। डॉक्टर लूका हमें बताते हैं कि यीशु ने अपने मंत्रालय में इस भविष्यवाणी को पूरा किया कि: उसने मुझे कैदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करने के लिए भेजा है। . . बंदियों को मुक्त करने के लिए (लूका ४:१८)। ग्रीक शब्द दासता से मुक्ति का सुझाव देता है। मसीहा यहाँ जिस गुलामी की बात करते हैं वह पाप की गुलामी है।

लेकिन, हमेशा की तरह, फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने शाब्दिक व्याख्या पर ध्यान केंद्रित किया और उसे उत्तर दिया, “हम इब्राहीम के वंशज हैं और कभी किसी के गुलाम नहीं रहे। आप कैसे कह सकते हैं कि हम स्वतंत्र हो जायेंगे” (यूहन्ना ८:३३)? इब्राहीम से अपने रिश्ते के कारण, उन्होंने नस्लीय, सांस्कृतिक और नैतिक श्रेष्ठता का दावा किया। हम कभी गुलाम नहीं रहे? एक यहूदी द्वारा दूसरे यहूदी को गुलाम कहने पर उसे मंदिर से बहिष्कृत कर देना दंडनीय था। लेकिन हकीकत क्या थी? मिस्र. असीरिया। बेबीलोन. फारस. मैसेडोनिया. सीरिया. और रोम! शायद उनका मतलब यह था कि उनके कई राजनीतिक आकाओं के बावजूद उन्हें कभी भी किसी व्यक्ति को ईश्वर के रूप में पूजा करने के लिए मजबूर नहीं किया गया। यह ऐसा था मानो उन्होंने मंदिर की ओर इशारा करके पूछा हो, “हमें कौन सी आज़ादी चाहिए जो हमारे पास पहले से ही नहीं है?”

तब यीशु ने अपना कथन स्पष्ट किया। उसने उत्तर दिया: मैं तुम से सच कहता हूं, जो कोई [आदतन] पाप करता है वह पाप का दास है। वे चुने हुए लोग हो सकते हैं; लेकिन नैतिक रूप से वे गुलाम थे, और – अन्य लोगों की तरह – पाप के बंधन में थे। अब दास का परिवार में कोई स्थायी स्थान नहीं होता, परन्तु पुत्र सदैव के लिये उसका हो जाता है। घर के भीतर के दासों को परिवार में स्थायी स्थान की गारंटी नहीं दी जाती है। परन्तु सच्चा पुत्र इसहाक की तरह स्थायी रूप से बना रहता है। उनका सुझाव है कि यदि वे उनकी सच्चाई में बने रहेंगे, तो यह उन्हें आध्यात्मिक रूप से मुक्त कर देगा। सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे (यूहन्ना ८:३४-३६)।

इसलिए, अब उन लोगों की प्रतीक्षा में कोई निंदा नहीं है जो मसीहा येशुआ के साथ जुड़े हुए हैं। क्यों? क्योंकि आत्मा का टोरा, जो इस मिलन को उत्पन्न करता है, ने मुझे पाप और मृत्यु के “टोरा” से मुक्त कर दिया है (रोमियों ८:१-२ सीजेबी)। जब हमारे भीतर मसीह का जीवन होता है, तो हम अनजाने में अपने स्वर्गीय पिता की छवि को जितना हम समझते हैं उससे कहीं अधिक धारण करते हैं। मुद्दा यह है कि, यीशु ने हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर हमें बचाया, इसलिए, अब कोई निंदा नहीं है, क्योंकि हमें माफ कर दिया गया है। जो मृत्यु वह मरा, वह पाप के लिये एक ही बार मरा, परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिये जीता है (रोमियों ६:१०; इब्रानियों ९:१२ भी देखें)। जब प्रभु हमारे पापों के लिए मरे, तो भविष्य में हमारे कितने पाप थे? वे सभी थे! इसलिए, अतीत के पापों या भविष्य के पापों के लिए कोई निंदा नहीं है क्योंकि हम मसीह में हैं (इफिसियों १:१, ३-४, ७, ९, ११, १३ और १९-२०)।

क्या इसका मतलब यह है कि हम कभी पाप नहीं करते? बिल्कुल नहीं, लेकिन हमें पाप नहीं करना है (प्रथम यूहन्ना २:१)। रब्बी शाऊल कहते हैं: इसी प्रकार, अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ, परन्तु मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित समझो (रोमियों ६:११)। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ऐसा मानकर हम स्वयं को पाप के प्रति मृत नहीं बना लेते हैं; हम इसे ऐसा मानते हैं क्योंकि यह ऐसा ही है। क्या पाप मर गया? बिल्कुल नहीं। इस संसार की शक्ति मजबूत और आकर्षक है (प्रथम यूहन्ना २:१५-१७), लेकिन जब यह अपनी अपील करती है, तो हमें प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता नहीं होती है। हमें पाप नहीं करना है। आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की इच्छा पूरी न करोगे (गलातियों ५:१६ एनएएसबी)। परन्तु जब हम पाप करते हैं तब भी हम पर दोष नहीं लगाया जाता। अब आप टोरा की ६१३ आज्ञाओं के अधीन नहीं, बल्कि अनुग्रह के अधीन रह रहे हैं (रोमियों ६:१४)।

किसी व्यक्ति की निंदा करने का एकमात्र तरीका महान श्वेत सिंहासन निर्णय में मेशियाच के बिना पाया जाना है (मेरी टिप्पणी देखें प्रकाशितवाक्य Fo– महान श्वेत सिंहासन निर्णय)। हमारा पहले ही न्याय हो चुका है और हम निर्दोष पाए गए हैं क्योंकि हम मसीह यीशु में हैं, जिन्होंने हमारे पापों का दंड अपने ऊपर ले लिया। अब प्रभु आत्मा है, और जहां प्रभु की आत्मा है, वहां स्वतंत्रता है (दूसरा कुरिन्थियों ३:१७)। हेलेलुयाह, क्या उद्धारकर्ता है! आइए हमें निंदा से मुक्त करने के लिए उसे धन्यवाद दें।

मैं जानता हूं कि आप इब्राहीम के वंशज हैं (कम से कम भौतिक अर्थ में)। लेकिन उनकी साझा विरासत वहीं ख़त्म हो गई । इब्राहीम उन सभी का आध्यात्मिक पूर्वज है जो यहोवा पर भरोसा करते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को सुना और उसका पालन किया। क्योंकि यीशु मानव देह में परमेश्वर का वचन है, उसे अस्वीकार करना परमेश्वर को अस्वीकार करना है। परिणामस्वरूप, अविश्वासी यहूदी केवल नाम के लिए इब्राहीम के वंशज थे। तौभी तुम मुझे मार डालने का उपाय ढूंढ़ते हो, क्योंकि मेरे वचन के लिये तुम्हारे पास कोई स्थान नहीं है (योचनान ८:३७)।

यह, यीशु ने निहित किया, उन्हें शैतान की संतान, झूठ का पिता और परमेश्वर के खिलाफ अंतिम विद्रोही बना दिया। मैं तुम से वही कहता हूं जो मैं ने पिता के साम्हने देखा है, और तुम वही कर रहे हो जो तुम ने अपने पिता से सुना है। धार्मिक नेताओं ने यीशु के निहितार्थ को समझा कि विरोधी उनका पिता था, इसलिए उन्होंने उत्तर दिया: इब्राहीम हमारा पिता है (यूहन्ना ८:३८-३९ए)। वे जानते थे कि इब्राहीम को “ईश्वर का मित्र” कहा जाता था, इसलिए यहूदियों ने कहा कि क्योंकि वे इब्राहीम के वंशज थे, वे भी ईश्वर के मित्र थे। प्रभु इस तथ्य का खंडन करते हैं कि आध्यात्मिक फल हृदय की स्थिति को अधिक इंगित करता है – केवल वंश से कहीं अधिक। ल्यूका ने बाद में इसे इस तरह कहा: पश्चाताप के अनुसार फल पैदा करो। और आपस में यह मत कहना, कि हमारा पिता इब्राहीम है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों में से इब्राहीम की सन्तान को उत्पन्न कर सकता है (लूका ३:८; रोमियों ९:६ और याकूब २:१८बी-२४ भी देखें)।

यीशु ने कहा, यदि तुम इब्राहीम की संतान होते, तो तुम वही करते जो इब्राहीम ने किया। पश्चाताप के बजाय, उनके प्रति उनके अभियोग ने घृणा को उकसाया। वैसे भी, तुम मुझ मनुष्य को, जिस ने तुम से वह सत्य बात कही है जो मैं ने परमेश्वर से सुनी है, मार डालने का उपाय ढूंढ़ रहे हो। इब्राहीम ने ऐसे काम नहीं किये। आप अपने ही पिता शैतान के काम कर रहे हैं (यूहन्ना ८:३९बी-४१ए)। येशुआ को मारने की कोशिश में, जिससे उन्होंने इनकार नहीं किया, धार्मिक नेता अपना असली मूल दिखा रहे थे। वे पूरी तरह समझ गए कि यीशु क्या कह रहा था। इस आरोप से आहत होकर, उनका उत्तर प्रभु की बात को सिद्ध करता रहा।

इतने सूक्ष्म अपमान के साथ, स्पष्ट रूप से इस धारणा पर लक्षित कि यीशु एक नकली मसीहा था, उन्होंने विरोध किया: हम नाजायज बच्चे नहीं हैं। हमारा एकमात्र पिता स्वयं परमेश्वर है (यूहन्ना ८:४१बी)। येशुआ ने इस अपशब्द को नजरअंदाज कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले वाले को किया था (यूहन्ना ८:१९), ताकि वह अपनी पहले की शिक्षा को पुष्ट कर सके कि वह पृथ्वी पर अपने पिता की इच्छा के अनुसार काम कर रहा है।

फरीसियों को इब्राहीम की तरह अपने पूर्वज के रूप में एडोनाई पर विश्वास करने के लिए आमंत्रित करने और उनके अपमान का दंश महसूस करने के बाद, यीशु ने उनके अविश्वास के स्रोत – प्राचीन सर्प को उजागर किया। यीशु ने उनसे कहा: यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता (जैसा कि वह नहीं है), तो तुम मुझसे प्रेम करते (जैसा कि तुम नहीं करते)। मसीहा को उनके बारे में उनके दृष्टिकोण में इसका प्रमाण मिलता है: क्योंकि मैं यहां ईश्वर से आया हूं (तनाव समय के एक क्षण की ओर इशारा करता है, दूसरे शब्दों में, मैरी के लिए उनका जन्म)। मैं अपने आप नहीं आया हूँ. . . परमेश्वर ने मुझे भेजा (योचनन ८:४२)।

मेरी भाषा आपको स्पष्ट क्यों नहीं है? क्योंकि मैं जो कहता हूं उसे तुम

[आध्यात्मिक रूप से समझने] में असमर्थ हो। वे इस विश्वास में इतने अंधे हो गए थे कि मसीहा न केवल मौखिक ब्यबस्था में विश्वास करेगा, बल्कि नए मौखिक कानूनों (Ei
– मौखिक ब्यबस्था देखें) के निर्माण में भी भाग लेगा, कि वे अपने सामने खड़े सत्य को नहीं देख सके। उनके विश्वास की कमी के कारण, यीशु ने पहले जो संकेत दिया था, वह अब इतनी स्पष्ट भाषा में बताता है कि वे भी समझ सकते हैं। आप अपने पिता शैतान के हैं, और आप अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। वह शुरू से ही हत्यारा था, और सच्चाई पर कायम नहीं था, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं थी। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी मूल भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है। यही कारण है कि जब यीशु ने उन से सत्य कहा, तब उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। तौभी मैं सच कहता हूं, इसलिये तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते (यूहन्ना ८:४३-४५)!

अब परमेश्वर के पुत्र ने उन्हें चुनौती दी: क्या तुम में से कोई मुझे पाप का दोषी साबित कर सकता है? यदि मैं सच कह रहा हूँ तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? निष्कर्ष स्पष्ट था; क्योंकि वे सुन नहीं रहे थे, वे परमेश्वर की ओर से नहीं थे। क्योंकि जो कोई परमेश्वर का है वह परमेश्वर जो कहता है वह सुनता है। तुम जो नहीं सुनते उसका कारण यह है कि तुम परमेश्वर के नहीं हो (यूहन्ना ८:४६-४७)। उनके सामने उनके निष्पाप जीवन की चुनौती थी। उन्हें उसमें कोई दोष नहीं मिला। उन्होंने केवल सच बोला। परिणामस्वरूप, यदि वे परमेश्वर की संतान होते तो वे उस पर विश्वास करते। जो दिव्य मूल का है वह दिव्य बातें सुनने के लिए तैयार है। यीशु ने अकाट्य तर्क के साथ उन्हें एक कोने में धकेल दिया। वे पृथ्वी के और प्रलोभन देनेवाले के थे – परमेश्वर के नहीं।

युहन्ना के पास ब्रह्मांड का एक दृष्टिकोण था जो प्रकाश और अंधेरे, सत्य और झूठ, जीवन और मृत्यु, परमेश्वर के राज्य और दुनिया के बीच तेजी से विभाजित था। उसके लिए, कोई समझौता नहीं था (प्रथम यूहन्ना १:५-७)। यह यहाँ विशेष रूप से स्पष्ट है। शैतान वह सब कुछ है जो एडोनाई में नहीं है, और पश्चातापहीन पाप की जीवनशैली अपनाना राजाओं के राजा के विरुद्ध आत्माओं के शत्रु का पक्ष लेना है। फरीसियों द्वारा मसीहा, परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करने का स्पष्ट और सरल कारण झूठ के पिता के प्रति उनका समर्पण था। यह एक भयानक अभियोग था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने उन्हें साँपों का झुण्ड कहा था (मती ३:७बी); मसीह ने कहा कि वे उनके पिता शैतान के हैं। क्रोध और रोष से भरकर, वे पीछे-पीछे फुसफुसाते हैं: क्या हम सही नहीं कह रहे हैं कि तुम सामरी हो और दुष्टात्मा से ग्रस्त हो (यूहन्ना ८:४८)? वह सामरी लोगों की तरह “चुने हुए लोगों” की बुराई कर रहा था। ये दो सबसे अपमानजनक बातें थीं जो एक यहूदी दूसरे से कह सकता था। यीशु ने सामरी की टिप्पणी को नजरअंदाज करना चुना, लेकिन शांति से उत्तर दिया: मुझ पर कोई राक्षस नहीं है,” यीशु ने कहा, लेकिन मैं अपने पिता का सम्मान करता हूं और आप मेरा अपमान करते हैं। पुत्र पिता की इच्छा के प्रति समर्पित है, जो निस्संदेह, राक्षस के कब्जे से जितना संभव हो उतना दूर है। मैं अपने लिए महिमा नहीं चाह रहा

हूं, इब्राहीम के जन्म से पहले, मैं हूं (यूहन्ना ८:५८)! ईश्वर होने का दावा करना और, विशेष रूप से, ईश्वर के नाम का उच्चारण करना (जैसा कि येशुआ ने अभी किया था) मौत की सज़ा थी (लैव्यव्यवस्था २४:१५-१६ और मिश्ना सैन्हेद्रिन ७:५, “निन्दा करने वाला तब तक दोषी नहीं है जब तक वह हाशेम, या नाम का उच्चारण नहीं करता है) । हो सकता है कि आज कुछ लोग यीशु के ईश्वर होने के दावे के बारे में भ्रमित हों। लेकिन उनके समय की महान महासभा के सदस्यों की ओर से ऐसा कोई भ्रम नहीं था।

इस पर धार्मिक नेता क्रोधित हो गए और उन्होंने उन्हें पत्थर मारने के लिए पत्थर उठा लिए। लेकिन भ्रम की स्थिति में, मसीह फिसल गया और उन लोगों के बीच में चला गया जो भीड़ में उसके दोस्त थे और चुपचाप लेकिन साहसपूर्वक मंदिर के मैदान से बाहर आ गए (यूहन्ना ८:५९)। यीशु ने सच बोलने और जीने की कीमत को किसी और से बेहतर समझा। मती ने येशुआ द्वारा एक विशेष रूप से चौंकाने वाला बयान दिया: यह मत समझो कि मैं भूमि पर शांति लाने के लिए आया हूं। मैं मेल कराने नहीं, परन्तु तलवार लाने आया हूं (मत्ती १०:३४)। तलवार का उद्देश्य बांटना है। शारीरिक रूप से, यह शरीर के एक हिस्से को दूसरे से अलग करता है। लाक्षणिक रूप से, सत्य की तलवार इतनी तेज है कि यह आत्मा और आत्मा के काल्पनिक बंधन के बीच फिसलकर हृदय के विचारों और दृष्टिकोणों को उजागर कर सकती है (इब्रानियों ४:१२)। और सामाजिक रूप से, तलवार समूहों को दो श्रेणियों में विभाजित करती है; यह उन लोगों को आकर्षित करता है जो आत्मसमर्पण करेंगे और जो नहीं करेंगे उनके लिए हिंसा भड़काता है। सत्य की चमचमाती तलवार के सामने खड़े होने पर समझौते की कोई गुंजाइश नहीं है। समर्पण करो या लड़ो.

बूथों के त्योहार के दौरान यीशु सच्चाई की तलवार मंदिर में लाए। कुछ ने आत्मसमर्पण कर दिया. हालाँकि, दूसरों ने एक निरर्थक, थका देने वाली, आत्म-विनाशकारी लड़ाई शुरू कर दी। उनकी प्रतिक्रिया अस्वीकृति के छह चरणों में एक अध्ययन है। पहला विरोधाभास था: आपकी गवाही सच्ची नहीं है (योचनान ८:१२बी-१३); दूसरा, संशयवाद: तुम्हारे पिता कहाँ हैं? हम नाजायज़ बच्चे नहीं हैं (यूहन्ना ८:१९ए और ४१बी); तीसरा, इनकार: हम इब्राहीम के वंशज हैं और कभी किसी के गुलाम नहीं रहे (योचनान ८:३३ए); चौथा अपमान: आप सामरी हैं और दुष्टात्मा से ग्रस्त हैं (यूहन्ना ८:४८); पाँचवाँ व्यंग्य: आप क्या सोचते हैं कि आप कौन हैं (योचनन ८:५३); जो हिंसा की ओर ले जाता है: और उन्होंने उसे पथराव करने के लिए पत्थर उठाए (यूहन्ना ८:५९ए)।

रब्बियों ने पत्थरबाजी को “ईश्वर के हाथ से मौत” कहा, लेकिन, विडंबना यह है कि यह वास्तव में लोगों के हाथों में था, जो किसी भी सकारात्मक शिक्षा की खुलेआम अवहेलना करते हुए पकड़े जाने पर बिना किसी मुकदमे के “विद्रोहियों की पिटाई” कर सकते थे। चाहे टोरा से हो या मौखिक ब्यबस्था से। विद्रोहियों को तब तक पीटा गया जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो गई। एक अन्य अवसर पर लोगों ने उसे पथराव करने के लिए मंदिर में पत्थर उठाये (यूहन्ना १०:३१)। नाज़रेथ में यीशु के साथ जो हुआ वह समग्र

रूप से इज़राइल राष्ट्र का एक सूक्ष्म जगत है; स्थानीय स्तर पर जो होगा वह अंततः राष्ट्रीय स्तर पर होगा। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि, जब मसीहा और उनके शहीद स्टीफन महासभा के सामने थे, तो उनके “परीक्षण” उनके स्वयं द्वारा लगाए गए सभी “नियमों” के लिए एक सीधा विरोधाभास थे (देखें एलएच – परीक्षणों के संबंध में महान महासभा के ब्यबस्था) ।

पाँच कारण जिनकी वजह से लोग यीशु को अस्वीकार करते हैं। लोग मसीहा को क्यों अस्वीकार करते हैं? येरुशलायिम में धार्मिक नेताओं के साथ उनकी मुलाकातें हमें कम से कम पांच कारणों की ओर इशारा करती हैं।

१. ज्ञान की कमी (योचनन ८:१४)। कुछ लोग येशुआ को मेशियाक के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि उनके पास उसके बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है क्योंकि उन्होंने यह देखने से इनकार कर दिया है कि उन्हें क्या स्पष्ट किया गया है (रोमियों १:१८-३२), या जो उन्हें बताया गया है वह गलत है। यही कारण है कि सुसमाचार को दुनिया भर में ले जाने की आवश्यकता है।

२. धारणा की कमी (यूहन्ना ८:१५ और २३)। धार्मिक विशेषज्ञों ने मानवीय मानकों के आधार पर निर्णय लिया; अर्थात्, उन्हें केवल प्राकृतिक, भौतिक या अवलोकन योग्य शब्दों में ही समझा जाता है। उनकी सोच में आध्यात्मिक आयाम का अभाव था, जो उन्हें आध्यात्मिक सत्य को समझने से रोकता था। कुछ लोग इन्हीं कारणों से मसीहा को अस्वीकार करते हैं। यह केवल ज्ञान की कमी नहीं है. यह किसी भी अलौकिक चीज़ की वास्तविकता को अस्वीकार करने का विकल्प है। इस प्रकार, आध्यात्मिक सत्य का उनके लिए उतना अधिक कोई अर्थ नहीं है जितना किसी जन्मांध व्यक्ति के लिए लाल रंग का होता है।

३. विनियोग की कमी (योचनन ८:३७)। टोरा-शिक्षकों और फरीसियों को परमेश्वर के वचन से अवगत कराया गया था क्योंकि पांडुलिपियों की नकल करना, उनके द्वारा बताए गए सिद्धांतों को सीखना और उन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में लागू करना उनका काम था। इज़राइल की स्थापना टोरा पर की गई थी। लेकिन धार्मिक नेताओं ने कभी भी पृष्ठ पर लिखे शब्दों को पूरी तरह से अपने दिलों तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी। वे उस चीज़ को लागू करने में विफल रहे जिसे उन्होंने संजोया था।

यीशु मसीह की सच्चाई का अध्ययन किया जा सकता है, और फिर भी, इसे कभी भी लागू नहीं किया जा सकता है। रूस के कलिनोव्का में, संडे स्कूल में उपस्थिति तब बढ़ी जब पादरी ने किसान बच्चों को मिठाइयाँ बाँटना शुरू कर दिया। सबसे वफादार में से एक पग-नाक वाला, झगड़ालू लड़का था, जो उचित धर्मपरायणता के साथ धर्मग्रंथों का पाठ करता था, इनाम अपनी जेब में रखता था और फिर उसे खाने के लिए खेतों में भाग जाता था। पादरी को लड़का पसंद आ गया और उसने उसे चर्च स्कूल में जाने के लिए मना लिया। अन्य प्रलोभन देकर पादरी लड़के को चार सुसमाचार सिखाने में कामयाब रहा।

उन्होंने इन चारों को कंठस्थ करने और चर्च में उन्हें लगातार सुनाने के लिए एक विशेष पुरस्कार जीता। साठ साल बाद भी, वह अभी भी सभी सुसमाचारों को शब्दशः सुना सकता था। आज, उसकी आत्मा शायद शीओल में है, लेकिन उसका शरीर ठंडी कठोर ज़मीन पर एक मार्कर के नीचे पड़ा है जिस पर नाम अंकित है: निकिता ख्रुश्चेव।

४. इच्छा की कमी (यूहन्ना ८:४४)। धार्मिक नेताओं ने यहोवा की आज्ञा का पालन करने के बजाय अपने स्वयं के पतित स्वभाव की इच्छाओं का पालन किया। कुछ लोग परमेश्वर से ज़्यादा अपने पाप से प्यार करते हैं, भले ही यह उनके जीवन को कैसे भी नष्ट कर दे। नशीली दवाओं के आदी लोग कभी भी संयम नहीं चुनेंगे जब तक कि उन्हें इसका समाधान मिल जाए; जब उन्हें अपनी निर्भरता से नफरत होने लगेगी तभी वे इसे ख़त्म करने का प्रयास करेंगे। यही बात धन, मनोरंजन या अवैध संबंधों के बारे में भी कही जा सकती है।

५. नम्रता की कमी (योचनान ८:५२-५३)। फरीसी यहूदी धर्म ने विनम्रता की भावना खो दी थी। उन्होंने सोचा कि उनके वंश ने उन्हें ईश्वर की स्वीकृति की गारंटी दी है। इतना ही नहीं, उनका मानना था कि उनका धार्मिक ज्ञान और गतिविधि उन्हें सत्य तक विशेष पहुंच प्रदान करती है। महान, धर्मात्मा माता-पिता के बच्चे। किसी ईसाई संगठन में उच्च पद के सदस्य। धार्मिक अधिकारी. सांप्रदायिक प्राधिकारी. उच्च शिक्षा के उत्कृष्ट संस्थानों के स्नातक। ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए पहले अहंकार को दूर किए बिना कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा। लेकिन अनुग्रह प्राप्त करने के लिए, हमें पहले इसके बिना अपनी निराशा को पहचानना होगा। अपने स्वयं के पाप की सीमा को स्वीकार करने के लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है।

प्रिय स्वर्गीय पिता, क्रूस पर मेरी जगह लेने के लिए अपने बेटे को भेजने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं इस सत्य पर विश्वास करना चुनता हूं कि जो लोग मसीह यीशु में हैं उनके लिए कोई निंदा नहीं है। मुझे अपने बच्चे के रूप में अनुशासित करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं ताकि मैं धार्मिकता का फल प्राप्त कर सकूं। मैं सच पर विश्वास करता हूं: प्यार में कोई डर नहीं होता। परन्तु सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है (१ यूहन्ना ४:१८)। मैं जानता हूं कि जब आप मुझे अनुशासित करते हैं तो आप मुझे दंड नहीं देते, क्योंकि आप मुझसे प्रेम करते हैं। मैं शैतान के झूठ को त्यागता हूं कि मैं अभी भी पाप और मृत्यु के नियमों के अधीन हूं। मैं प्रकाश में चलने की अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करता हूं (१ यूहन्ना १:७), और मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मुझे वह समय दिखाएं जब मैं शरीर के अनुसार चला हूं। मैं इन बार आपके सामने स्वीकार करता हूं, और आपकी क्षमा और शुद्धिकरण के लिए आपको धन्यवाद देता हूं। अब मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दें ताकि मैं उसके अनुसार चल सकूं। यीशु के अनमोल नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन